कर गुजरान गरीबी में , मगरुरी क्या पर करता है |
नाशवंत वस्तु है जग में , फिर ममता क्या तू करता है ||

माटी चुन चुन महल बनाया, गंवार कहे घर मेरा है |
न घर तेरा न घर मेरा जी, चिड़िया रेन बसेरा है ||

इस दुनिया में कोई नहीं आपना, क्या अपना अपना करता है |
काच्ची माटी का घाट घडुला, घड़ी पलक में ढलता है ||

इस दुनिया में नाटक देखत, देख भटकता फिरता है |
कहे कबीर सुंणो भाई साधो, हरी को क्यों न सुमरता है ||

जय श्री नाथजी की....